पोइली सेनगुप्ता

पानी के फूल

चित्रांकन पुलक विश्वास

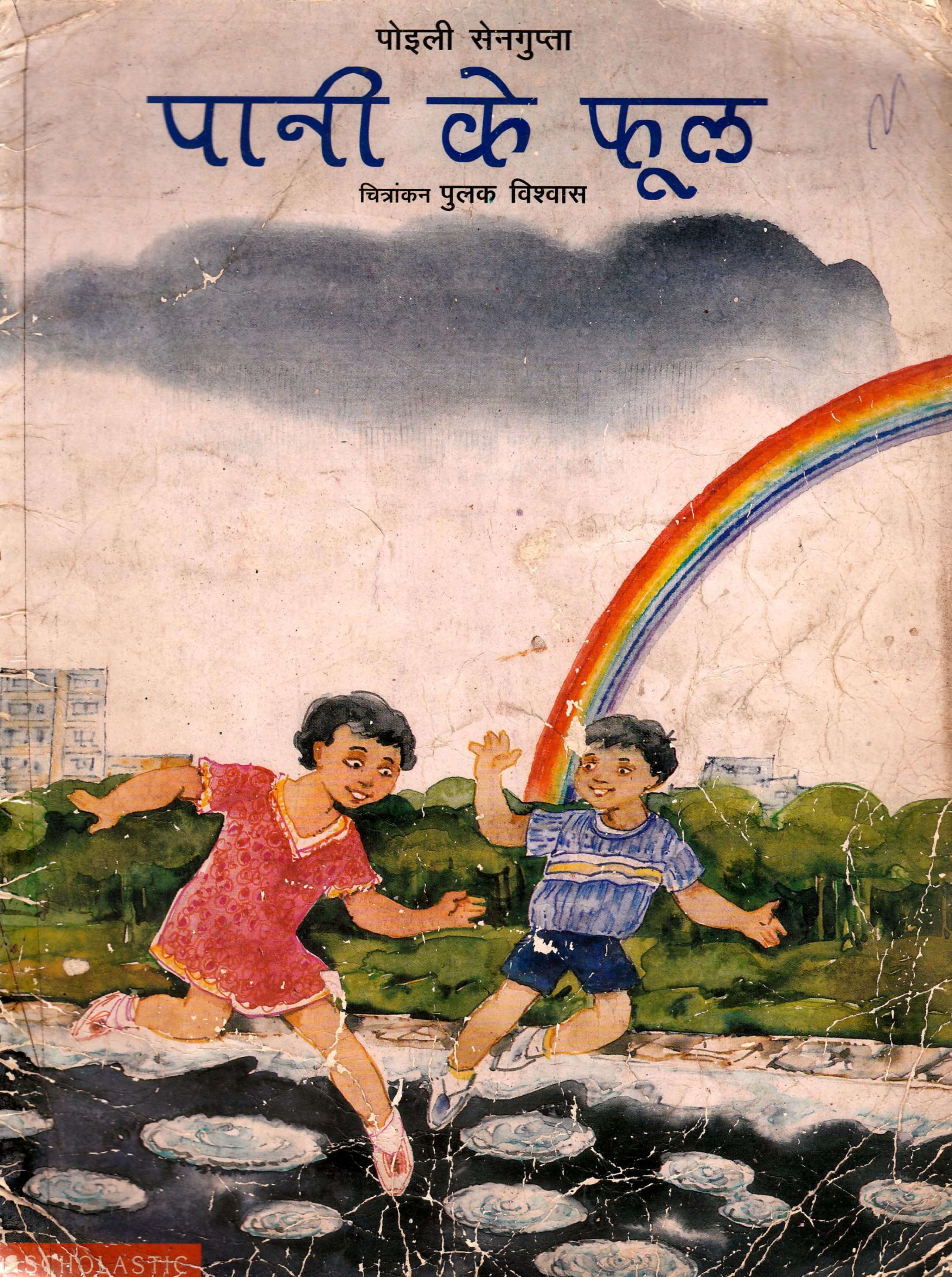

SCHOLASTIC

पानी के फूल

पोइली सेनगुप्ता

अनुवाद
प्रयाग शुक्ल

चित्रांकन
पुलक विश्वास

स्कॉलास्टिक इंडिया

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश का, किसी भी रूप से, पुर्नमुद्रण नहीं किया जा सकता। अनुमति के लिए प्रकाशक को लिखें।

पहला संस्करण : मई, 2000

© पोइली सेनगुप्ता
चित्र © स्कॉलास्टिक इंडिया

सर्वाधिकार सुरक्षित

स्कॉलास्टिक इंडिया (प्रा.) लिमिटेड
29 उद्योग विहार, फेज़-1, गुड़गाँव-122016
द्वारा प्रकाशित।

स्कॉलास्टिक इंडिया भारत में स्कॉलास्टिक कार्पोरेशन की एक उप-संस्था है। भारत के अतिरिक्त कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, यूनाइटेड किंगडम, मेक्सिको, हांगकांग और अर्जेंटीना में भी स्कॉलास्टिक कार्पोरेशन की उप-संस्थाएँ हैं।

ISBN 81-7655-012-4

मूल्य : 40 रुपये

यह बात उस समय की है, जब दुनिया भर में पानी के गढ्ढे फूलों जैसे लगते थे। तब उन्हें कोई पानी के गढ्ढे नहीं कहता था, वे तो कहलाते थे पानी के फूल। और वे देखने में ऐसे लगते थे —

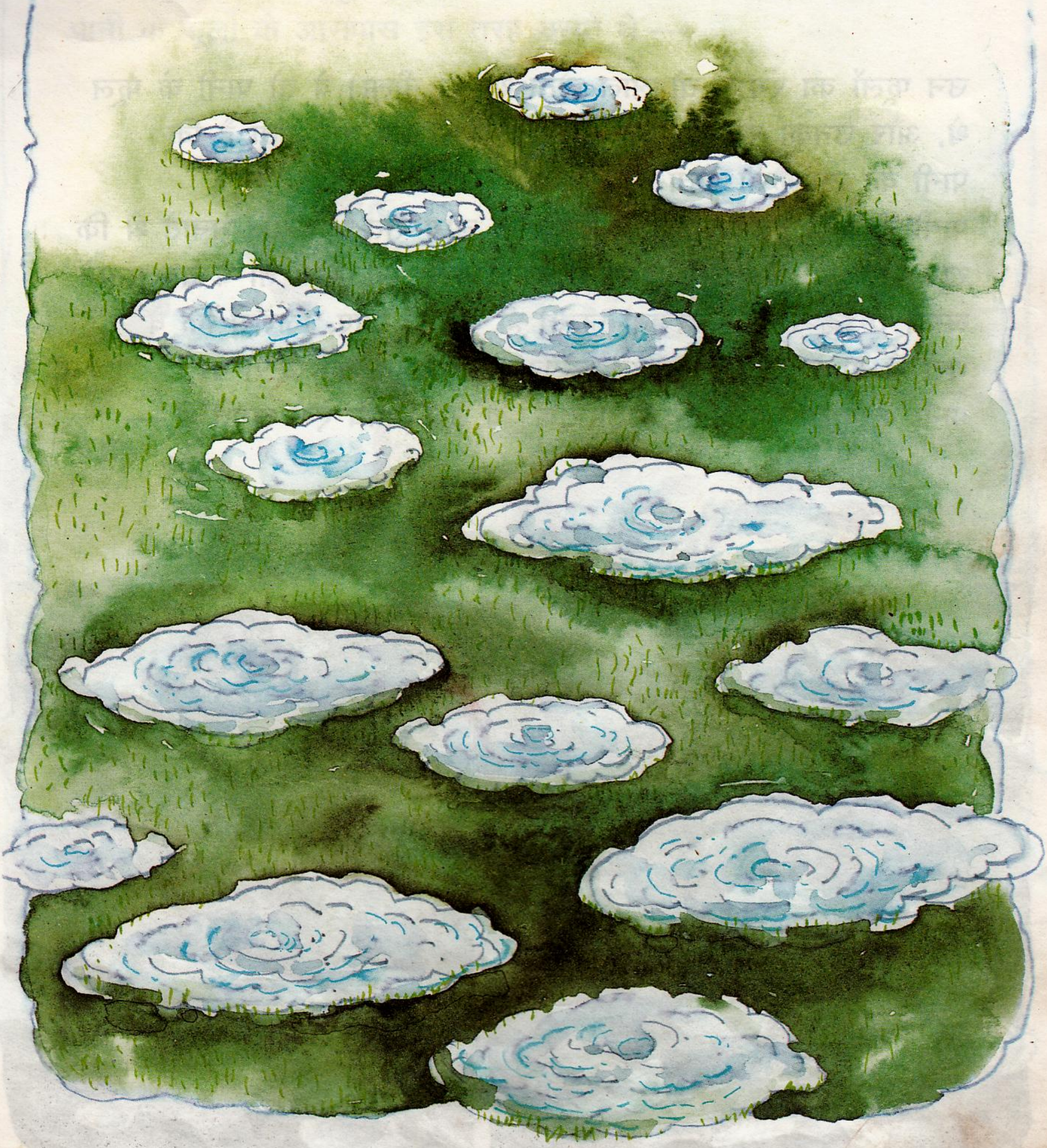

उन फूलों का रंग न तो लाल होता था, न नीला। वे तो पानी के फूल थे, और उनका रंग भी पानी जैसा ही था। क्या तुम्हें पता है कि पानी का रंग कैसा होता है?

पानी के फूल इतने सुंदर लगते थे कि लोग रात-दिन यही मनाते थे कि खूब पानी बरसे। और जब पानी काफी बरस जाता था तो वे यह मनाने लगते थे कि उसका बरसना जल्दी ही बंद हो जाए, जिससे कि वे घरों से बाहर निकल कर सड़क पर, और सड़क की पटरी पर, पानी के फूलों का आनंद उठा सकें। वे उस समय ऐसे लगते थे —

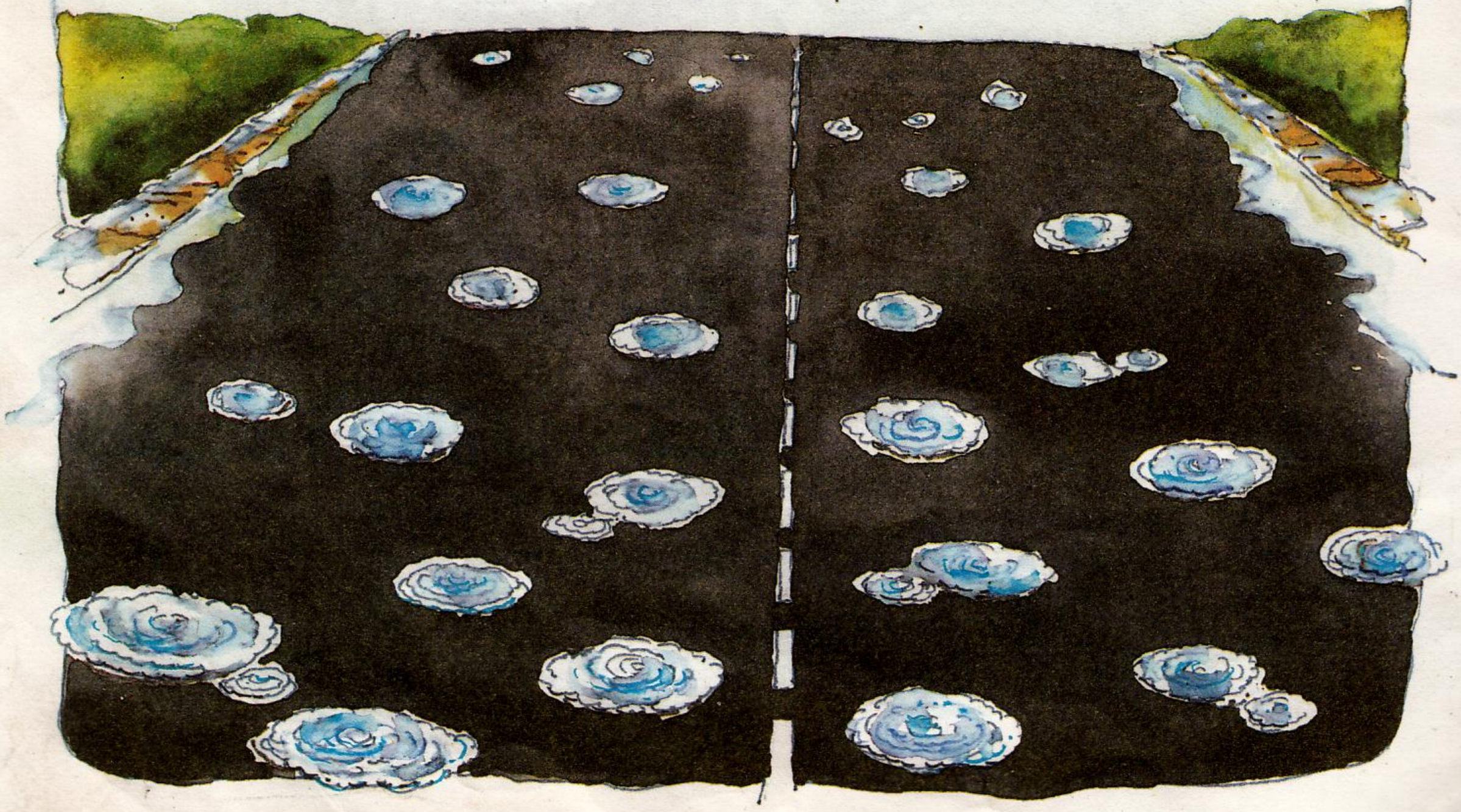

जब सड़क पर, और सड़क की पटरी पर, पानी के फूल होते थे तो लोग बहुत संभल-संभल कर चलते थे। वे भला पानी के फूलों के ऊपर कैसे चल सकते थे? तुम्हीं बताओ, चल सकते थे क्या? इसलिए वे पानी के फूलों के आसपास इस तरह चलते थे —

छोटे बच्चे तो और भी सावधान रहते थे। वे इस तरह चलते थे कि
पानी के फूलों के ऊपर भूल से भी कहीं पाँव न पड़ जाए।
वे चलते थे दबे पाँव...

और बसें और गाड़ियाँ, वे कैसे चलती थीं? भाई, वे तो बस उन्हें कूदकर ही पार करती थीं। उसी तरह जैसे हम स्टापू के खेल में खानों को टापकर पार करते हैं।

एक दिन अगस्त के महीने में, जब लोग रात का खाना खा रहे थे, तो जो बरसात शुरू हुई वह दूसरे दिन नाश्ते तक ही नहीं, दोपहर के भोजन तक, और फिर रात के खाने से लेकर, अगली सुबह के नाश्ते तक होती ही रही। झड़ी थमी ही नहीं। ज़रा सोचो तो कुल कितना पानी पड़ा होगा!

लोग घरों के बाहर आकर पानी के ढेर सारे फूलों को देखने के लिए उतावले हो उठे थे। और उन्होंने पानी के बंद हो जाने के लिए खूब प्रार्थना करनी शुरू की। खैर, नाश्ते के ख़त्म होने तक पानी रूक भी गया। और वे जब घरों से बाहर निकल कर सड़कों पर आए तो सड़कें, बागीचों की तरह सुंदर लग रही थीं। पानी के फूल इतने सारे थे कि वे आपस में एक-दूसरे से जुड़े हुए लग रहे थे।

सब कुछ इतना सुंदर था कि कुछ देर के लिए किसी के मुँह से कोई बोल ही नहीं फूटा। बच्चों के मुँह से भी नहीं। और फिर हुआ कुछ यों, जैसा स्कूल में होता है, सभी एक साथ कुछ न कुछ बोल उठे। किसी ने कहा, 'अद्‌भुत', किसी ने कहा 'बहुत खूब', किसी ने कहा 'सुंदर'। एक छोटे से बच्चे ने कहा, 'वाह-वाह।' तुम वहाँ होते तो क्या कहते? लेकिन जब सभी 'अद्‌भुत' और 'बहुत खूब' और 'सुंदर' कह चुके तभी एक आवाज़ सबने सुनी, 'बचाओ, बचाओ।' कौन हो सकता था? लोगों ने चारों ओर देखा, सड़क पर, पटरी पर, लेकिन वहाँ से तो किसी ने नहीं कहा था, 'बचाओ।' किसी बच्चे ने भी नहीं। तब फिर कौन था जिसने कहा, 'बचाओ'!

तभी फिर आवाज़ आयी, 'बचाओ, बचाओ।' ऐसा मालूम हुआ कि यह आवाज़ न तो सड़क से आयी थी, न पटरी से, न ही किसी के मुँह से। यह आवाज़ तो आयी थी लोगों के सिर के ऊपर से, इसलिए सभी ऊपर की ओर देखने लगे।

उन्होंने क्या देखा? आकाश ने तो 'बचाओ' कहा नहीं था, न ही चिड़ियों ने। नहीं, भाई, यह तो 9.10 वाली बस थी। 'बचाओ-बचाओ' कह रही थी और उनके सिर के ऊपर चक्कर लगा रही थी।

''तुम चिल्ला क्यों रही हो?'' किसी ने कहा। ''क्या अपने को चिड़िया समझ रही हो?'' किसी और ने कहा।
''पानी के फूल कितने सुंदर हैं न?'' किसी तीसरे ने कहा।
''वाह-वाह!'' यह कहा बच्चे ने।
पर, सबसे ऊँची आवाज़ तो थी 9.10 की बस की 'बचाओ-बचाओ'। इस बीच सभी बस की ओर देखते रहे थे, और अब उनकी गरदन दुखने लगी थी।

इसलिए, बच्चे के अलावा, सभी ने कहा, ''नीचे आ जाओ, 9.10 की बस,
नीचे आ जाओ!'' फिर सभी ने अपने सिर नीचे झुका लिए और सड़क पर,
और पटरी पर, खिले हुए पानी के सुंदर फूलों की ओर देखने लगे।
''बचाओ, बचाओ'' बस फिर चिल्लायी। ''मैं नीचे नहीं आ सकती।
मैं पानी के फूलों के ऊपर से छलांग लगा रही हूँ, बचाओ, बचाओ।''
उनके सिरों के ऊपर, चक्कर पर चक्कर लगाती हुई बस चिल्लायी।

अब करें तो क्या करें? सभी सोच में पड़ गये। सड़क पर, और पटरी पर,
इतने ज्यादा पानी के फूल थे कि वे एक-दूसरे से बिलकुल सटे हुए थे।
नीचे उतरने के लिए 9.10 की बस के लिए जगह ही भला कहाँ बची थी!
अब क्या किया जाए?
''सूरज जब तक पानी के फूलों को सुखा न दे, हमें तब तक इंतजार करना
चाहिए।'' किसी ने कहा।
''बस को किसी के घर की छत पर उतार लेना चाहिए।'' किसी दूसरे ने कहा।
''नहीं।'' किसी तीसरे ने कहा।
''वाह-वाह!'' बच्चे ने कहा।

लोग ये सब बातें कर ही रहे थे कि 9.10 की बस बोली, ''बचाओ! मैं गिर रही हूँ।''

कोई कुछ कह पाता, यहाँ तक कि बच्चा ही ''वाह-वाह'' कर पाता, इससे पहले ही 9.10 की बस पानी के सबसे बड़े फूल के ऊपर गिर पड़ी।

छपाक की ऐसी आवाज़ आयी कि पानी के फूल थरथरा उठे और सिर से पाँव तक सराबोर हो गये। घरों के सामने से सभी बोल पड़े,

''बचाओ! बचाओ!''

बस बच्चा ही था जो कुछ ना बोला। मालूम है, उसने क्या किया?
वह नजदीक के पानी के फूलों की ओर भागा और छप-छप
करने लगा।

फिर वह दूसरे फूलों की ओर गया, और वहाँ भी लगातार छपाक-छपाक करने लगा। और जब दूसरे बच्चों ने उसे ऐसा करते हुए देखा तो वे भी ''बचाओ'' कहना छोड़कर पानी के फूलों पर उसी तरह 'छपाक-छपाक' करते हुए दौड़ने लगे। इससे पहले कि कोई कह पाता, ''पानी के फूल'', सभी लोग सड़क के बीचोंबीच आकर, एक-दूसरे पर पानी उछालने लगे, और हँसने लगे, यहाँ तक कि 9.10 की बस भी इस छपाक छपाक में शामिल हो गयी।

अब पानी के फूलों को इस छपाक-छपाक से गुस्सा आना ही था। वे बोले ''बचाओ, बचाओ!'' लेकिन किसी ने उनकी बात नहीं सुनी। सब छपाक छपाक करते हुए हँसते रहे। अब पानी के फूलों को बहुत ज्यादा गुस्सा आ गया, और उन्होंने तय किया कि वे पानी के फूल नहीं बने रहेंगे, वे तो बन जाएँगे गढ्ढे।

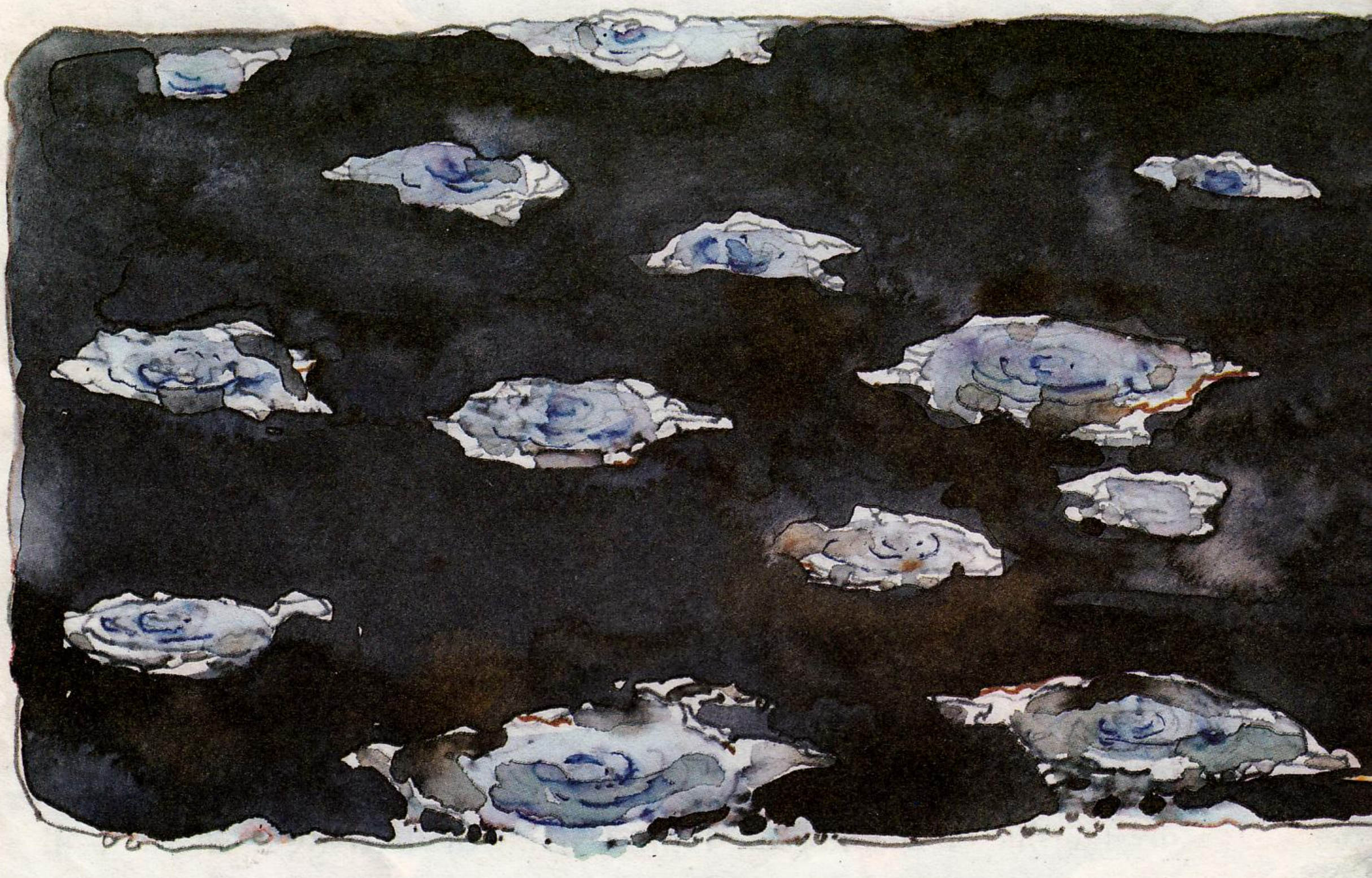

यही कारण है कि अब पानी के फूलों की जगह हमें पानी के गढ्ढे दिखलाई पड़ते हैं। क्या तुम पानी के फूलों का बने रहना पसंद करते? या फिर छपाक छपाक करने के लिए ये गढ्ढे ही तुम्हें अच्छे लगते हैं?